ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र शहर के मध्य में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के समीप स्थित है । ब्रह्मसरोवर कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है । ब्रह्मसरोवर तक पहुंचने के लिए पक्के राजमार्ग की व्यवस्था की गई है । यात्री सुगमतापूर्वक वाहनों द्वारा या पैदल चलकर भी सरोवर तट पर पहुंच सकते हैं ।

कुरुक्षेत्र की पावन धरा प्राचीन काल से ही अपने तीर्थों के लिए विख्यात रही है । इस क्षेत्र के अधिकांश तीर्थ त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) से सम्बन्धित रही है । ब्रह्मा से सम्बन्धित ब्रह्मसरोवर तीर्थ सृष्टि के आदि तीर्थ के नाम से विख्यात रहा है । वामन पुराण में ब्रह्मसरोवर तीर्थ का उल्लेख करते हुए महर्षि लोमहर्षण का कथन है :

ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थं विष्णुं च लक्ष्मीसहितं तथैव ।
रुद्रं च देवं प्रणिपत्य मूर्ध्ना तीर्थं वरं ब्रह्मसरः प्रवक्ष्ये ।

(वामन पुराण 22/50)

उपर्युक्त श्लोक से ब्रह्मसरोवर का वैशिष्ट्य एवं महत्त्व स्वयमेव सिद्ध हो जाता है । वामन पुराण के अनुसार इस तीर्थ की स्थापना ब्रह्मा ने पृथूदक तीर्थ के समीप सरस्वती के तट पर की थी :

तत्रैव ब्रह्मयोन्यस्ति ब्रह्मणा यत्र निर्मिता ।
पृथूदकं समाश्रित्य सरस्वत्यास्तटे स्थितः ।

(वामन पुराण, 18/21)

महर्षि परशुराम के द्वारा अनेक बार पितृतर्पण हेतु यज्ञ किए जाने से इसका नाम समन्तपंचक हुआ । वामन पुराण में पहले इसे ब्रह्मसर तथा बाद में रामह्रद की संज्ञा से व्यवहृत किया गया है :

आद्यं ब्रह्मसरः पुण्यं ततो रामह्रद स्मृतः ।

वामन पुराण में ही अन्यत्र ऐसा भी उल्लेख है कि सृष्टि रचना का ध्यान करते हुए ब्रह्मा जी ने चारों वर्णों की सृष्टि इसी स्थान पर की थी ।

कुरुक्षेत्र के इस पवित्रतम तीर्थ के धार्मिक महत्त्व का विपुल वर्णन पुराणों एवं महाभारत में यत्र तत्र दिखलाई पड़ता है । वामन पुराण में इसके महत्त्व के विषय में लिखा है :

चतुर्मुखं ब्रह्मतीर्थं सरो मर्यादया स्थितम् ।
ये सेवन्ते चतुर्दश्यां सोपवासा वसन्ति च ।
अष्टम्यां कृष्णपक्षस्य चैत्रे मासि द्विजोत्तमा: ।
ते पश्यन्ति परं सूक्ष्मं यस्मात् नावर्तते पुन: ।

(वामन पुराण, 21/28-29)

अर्थात् चतुर्दशी तथा चैत्र मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को इस तीर्थ में स्नान व उपवास करने वाला व्यक्ति सूक्ष्मातिसूक्ष्म परब्रह्म का साक्षात्कार कर जन्ममरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है ।

ऐसा उल्लेख भी मिलता है कि सूर्यग्रहण के अवसर पर यहां स्नान करने से सहस्त्र अश्वमेध यज्ञों के तुल्य फल की प्राप्ति होती है । सम्भवत: इसी कारण सूर्यग्रहण के अवसर पर लाखों की संख्या में श्रद्धालुगण स्नान-ध्यान व पूजा-अर्चना करके पुण्य के भागी बनते हैं । वामन पुराण में अन्यत्र कहा है कि मोक्ष का अभिलाषी यहां स्नान करके पुनर्जन्म ग्रहण नहीं करता :

तत्र स्नात्वा मुक्तिकाम: पुनर्योनिं न पश्यति ।

(वामन पुराण, 18/25)

महाभारत में स्पष्ट रूप से लिखा है कि इस तीर्थ में स्नान करने वाला व्यक्ति ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है तथा निसन्देह अपने कुल को पवित्र करता है :

तत्र समासाहा नरव्याघ्र ब्रह्मलोकं प्राप्यते ।
पुनात्यास्वकां चैवं कुलं नास्त्यत्र संशय: ।

(महाभारत, वन पर्व 83/112)

धार्मिक आख्यानों के आधार पर पुरुरवा तथा उर्वशी का संवाद भी इसी सरोवर के तट पर होने की पुष्टि होती है ।

सर्वप्रथम सन् 1850 ई0 में थानेसर के जिलाधीश श्री लरकिन के द्वारा इस तीर्थ को खुदवाकर इसका पुनर्निर्माण करवाया गया । लेकिन तीर्थ को वर्तमान स्वरूप देने का सम्पूर्ण श्रेय परमश्रद्धेय स्वर्गीय श्री गुलजारी लाल जी नन्दा को है । जिनके प्रेरणादायी तत्वावधान में ही तीर्थों के संरक्षण एवं विकास हेतु सन् 1968 में कुरुक्षेत्र विकास मण्डल का गठन किया गया । अपने गठन के तुरन्त पश्चात् कुरुक्षेत्र विकास मण्डल द्वारा सर्वप्रथम ब्रह्मसरोवर के नवीनीकरण एवं विकास सम्बन्धी कार्य को प्रारम्भ किया गया ।

विशाल सरोवर का विकास कार्य कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड द्वारा पूरा किया जा रहा है । चारों ओर से सरोवर को छोटा किया गया है । सरोवर को 15 फुट गहरा किया गया है । इसके चारों तरफ हरी-भरी मनोहारिणी वनस्थली के से सौन्दर्य की व्यवस्था की गई है । स्त्रियों के स्नानार्थ अलग घाटों का निर्माण किया गया है । शौचालय आदि की भी समुचित व्यवस्था की गई है । सरोवर के ठीक मध्य में सर्वेश्वर महादेव का मन्दिर तथा दोनों भागों के मध्य में चन्द्रकूप है।

दूर-दूर तक विस्तृत शुभ्र नीलिमा से युक्त इसकी स्वच्छ एवं स्निग्ध जल-राशि मानव के संतप्त हृदय को अनुपम शान्ति से तृप्त करती है ।

पूर्वी ब्रह्मसरोवर की लम्बाई 1800 फुट, चौड़ाई 1500 फुट व पश्चिमी ब्रह्मसरोवर की लम्बाई 1500 फुट, चौड़ाई 1500 फुट तथा इसकी गहराई 15 फुट है । सरोवर के चारों ओर लाल पत्थर से निर्मित 20 फुट चौड़ा प्लेटफार्म, 18 फुट चौड़ी 6 सीढ़ियां एवं 40 फुट चौड़ा विशाल परिक्रमा पथ निर्मित है । इसी परिक्रमा पथ को मेहराब निर्मित लघु गृहों से सुसज्जित किया गया है । वस्तुत: ये लघु गृह पर्यटकों तथा तीर्थ यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए निर्मित किए गए हैं । इस सरोवर के समीप अनेक प्राचीन और आधुनिक मन्दिर वास्तुकला की विभिन्न शैली से निर्मित है । सरोवर के मध्य में सर्वेश्वर महादेव का मन्दिर शोभायमान है । जनश्रुति के अनुसार ब्रह्मा जी ने सर्वप्रथम शिवलिंग की स्थापना यहां पर की थी । इसी मन्दिर तक पहुंचने के लिए एक सेतु का निर्माण किया गया है । इस मन्दिर के चारों कोनों में नागर शैली में निर्मित चार शिखर सुशोभित हैं जो वास्तुकला की दृष्टि से अनूठे हैं । ब्रह्मसरोवर की उत्तरी दिशा में एक प्राचीन घाट के अवशेष देखने को मिलते हैं जिसे शेरों वाला घाट के नाम से जाना जाता है । इसी घाट का निर्माण ईस्ट इण्डिया कम्पनी के काल में सन् 1855 में हुआ था । जैसा कि नाम से प्रतीत होता है इस घाट के मेहराब के ऊपर एक लम्बे प्लेटफार्म पर दो सिहों को आमने-सामने दिखाया गया है । इसी सरोवर के थोड़ी दूर एक प्राचीन बौद्ध स्तूप पुरातत्व उत्खनन से प्राप्त हुआ है जो 7 वीं सदी का माना जाता है । सम्भवत: इसी स्तूप के बारे में ह्वेनसांग ने अपनी पुस्तक सीयूकी में इसका वर्णन किया है एवं अलेक्जेंडर कनिंघम ने भी इसी स्तूप के बारे में अपने विवरण में बताया है ।

ब्रह्मसरोवर की विशालता के बारे में लिखते हुए अकबर के राजदरबार के लेखक अबुल फजल ने इसकी तुलना एक लघु समुद्र से की है तथा अलबेरुनी ने भी इसी सरोवर की पवित्रता के बारे में अपने किताब-उल-हिन्द में बताया है ।